पाठ्यक्रम का एक भाग बना दिया गया।

2. वैदिक सभ्यता के उद्भव से सन् 1998 ई० तक 1.96 अरब वर्ष बीत चुके हैं (4, 10-12)। कार्नेल विश्वविद्यालय में खगोल और अन्तरिक्ष विज्ञान के प्रोफेसर कार्ल सेगन ने पृथिवी के जीवन को 4.6 अरब वर्ष तथा सूर्य के जीवन को पाँच अरब वर्ष निर्धारित किया है (15)। इसलिए प्राचीन वैदिक ऋषियों द्वारा दिए गए आंकड़ों से किसी को चौंकने की कोई आवश्यकता नहीं है।

3. सभी हिन्दू–जैन, बौद्ध और सिक्ख जानते हैं कि रामायण-काल का समय महाभारत-काल से पूर्व है (देखिए प्रश्न 7) और इसके विपरीत नहीं है जैसा कि जार्जिया उच्च विद्यालय की दसवीं की विश्व-साहित्य की पाठ्य-पुस्तक में निर्दिष्ट किया गया है। **यह अशुद्धि केवल जार्जिया तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि इसे सम्पूर्ण पाश्चात्य जगत में पढ़ाया जाता है।** रामायण काल–त्रेतायुग, महाभारत काल द्वापरयुग से लाखों वर्ष पूर्व हुआ था। महाभारत को द्वापरयुग में लिखा गया था। श्रीकृष्ण का निर्वाण, भौतिक शरीर का त्याग, द्वापरयुग के अन्त तथा वर्तमान कलियुग की शुरुआत को प्रकट करता है। तब से सन् 2003 ई० तक 5,105 वर्ष बीत चुके हैं (8, 10-13)।

4. जार्जिया उच्च विद्यालय की दसवीं कक्षा की विश्व-साहित्य की पाठ्यपुस्तक के लेखक के अनुसार व्यास का अर्थ संग्रहकर्त्ता अथवा व्यवस्थापक होता है, जबकि वेदव्यास उस ऋषि का नाम है जिसने महाभारत-युद्ध की ऐतिहासिक घटनाओं को लिखा था (10-13)।

5. यह सत्य है कि श्रीकृष्ण ने कभी किसी नए पंथ को नहीं चलाया। श्रीकृष्ण के भक्तों को वैष्णव कहा जाता है। वैष्णव धर्म हिन्दुओं का प्रमुख अंग है। वैष्णव किसी भी प्रकार का Cult अथवा किसी विशेष गिरोह का नाम नहीं है (9, 14)।

संसार के कुल एक अरब संख्या वाले हिन्दुओं में से 50 करोड़ हिन्दू वैष्णव सम्प्रदाय अथवा हिन्दू धर्म के मुख्य अंग से सम्बन्धित हैं। सुप्रसिद्ध महानुभाव महात्मा गांधी भी एक वैष्णव थे। जार्जिया उच्च विद्यालय की दसवीं की विश्व-साहित्य की पाठ्यपुस्तक के लेखक ने स्पष्ट रूप से वैष्णव हिन्दुओं के लिए Cult अथवा किसी विशेष गिरोह का नाम देकर हिन्दू इतिहास को अपमानित करने का प्रयास किया है। इन लेखकों ने विशेष गिरोह के नाम 'जिस जोन्स', 'डेविड कोरेश' को 'Cult' अथवा 'विशेष गिरोह' की भाँति नाम देकर, वैष्णव सम्प्रदाय को भी 'कृष्ण Cult' अथवा 'कृष्ण गिरोह' के रूप में चित्रित करने का प्रयास किया है। समकालिक अमेरिकन समाज में 'Cult अथवा किसी विशेष गिरोह' शब्द को भद्दे अर्थों में प्रयोग किया जाता है। शाब्दिक रूप से 'Cult अथवा किसी विशेष गिरोह' शब्द का प्रयोग बहुत ही संकुचित झक्की गिरोह की विचारधारा को इंगित करने के लिए किया जाता है। प्रत्यक्ष रूप से ये लेखक समाजशास्त्र-सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण परिभाषाओं से अनभिज्ञ हैं। पाठ्यपुस्तक के लेखक 'Cult अथवा किसी विशेष गिरोह' शब्द का, 'धार्मिक पंथ' अथवा अलंकरण, धर्म, मत-मतान्तरों में अन्तर समझने में असफल रहे हैं (5)। इन बुद्धिजीवियों का जन्म और पालन-पोषण अमेरिका में हुआ है। इन बुद्धिजीवियों को वर्तमान अमेरिकन समुदायों में 'Cult अथवा किसी विशेष गिरोह' शब्द की परिभाषा के अपमान-जनक प्रभाव के बारे में जागरूक होना चाहिए। या तो ये लेखक अनभिज्ञ हैं अथवा ये कुछ दीर्घकालिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु योजनाबद्ध दूरगामी रणनीति के तहत किशोर और किशोरियों को विकृत इतिहास में विश्वास बनाने के लिए उनके दिमाग को अति सूक्ष्मता से प्रदूषित कर रहे हैं। जन-साधारण का विश्वास है कि यह सब सोची-समझी रणनीति से प्रेरित है।

'हरे कृष्ण' भक्तजनों को 'Cult अथवा किसी विशेष गिरोह'

के अनुगामी के रूप में दर्शाया गया है। 'हरे कृष्ण' भक्तजनों को पिछले 5000 वर्षों के दौरान वैष्णव मानने की उचित परम्परा के विपरीत 'Cult अथवा किसी विशेष गिरोह' का अनुगामी दर्शाया गया है। [14] A.P.A. (अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन– अमेरिकन मानसिक चिकित्सा संगठन) द्वारा 'हरे कृष्ण' को एक 'Cult अथवा किसी विशेष गिरोह' शब्द के रूप में चित्रित किया गया। A.P.A./ए॰पी॰ए॰ की इस अशुद्धि को दूर करवाने में इस पुस्तक के लेखक की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण रही। A.P.A./ ए॰पी॰ए॰ अब 'हरे कृष्ण' को प्रकट करने के लिए 'Cult अथवा किसी विशेष गिरोह' शब्द का प्रयोग नहीं करती, बल्कि A.P.A./ ए॰पी॰ए॰ 'हरे कृष्ण भक्तजनों को' हिन्दू धर्म के वैष्णव-पंथ का एक अंग मानती है, A.P.A./ए॰पी॰ए॰ ने अपनी गलती के लिए क्षमा-प्रार्थना भी की है।

6. पाठ्यपुस्तकों ने गीता के उन उपदेशों की अवहेलना की है, जहाँ पर श्रीकृष्ण ने निष्काम कर्म तथा लक्ष्य-प्राप्ति के लिए समर्पित और निष्ठावान् बने रहने को कहा है। [9] इसके अतिरिक्त पाठ्यपुस्तकों के लेखकों ने श्रीकृष्ण को एक 'प्रेमी या आशिक' के रूप में चित्रित कर हिन्दू समाज को एक भद्दे रूप में प्रकट किया है। उन्होंने लिखा कि, 'कृष्ण के आकर्षक व्यक्तित्व तथा मनोहारी रूप-रंग ने उनको औरतों का चहेता बना दिया। वास्तविकता यह थी कि विवाहित औरतों ने भी श्रीकृष्ण की बाँसुरी का अनुसरण करने के लिए अपना घर छोड़ दिया।' यह लिखकर पाठ्यपुस्तकों के लेखकों ने विवाहित हिन्दू औरतों के पतिव्रता धर्म की पवित्रता का घिनौना मजाक उड़ाया है।

7. प्राचीन यात्रियों के वृत्तान्तों और 400 ई॰पू॰ में भारतीय महाराजा विक्रमादित्य के यहाँ यूनानी राजदूत मैगस्थनीज द्वारा किए गए विभिन्न संस्कृतियों के तुलनात्मक अध्ययन का कहीं लेशमात्र वर्णन भी नहीं दिया गय। है। मैगस्थनीज की पुस्तिक 'इण्डिका'

उस समय की भारतीय सभ्यता का एक जीता–जागता प्रमाण है। [9] 'इण्डिका' में उस समय चल रहे किसी भी युद्ध का वर्णन नहीं मिलता, न तो राम के युद्ध अर्थात् रामायण काल का और न ही कृष्ण के युद्ध अर्थात् महाभारत का।

8. अमेरिकन पाठ्यपुस्तक के लेखकों की टिप्पणियाँ जैसे कि 'मानव रूपी भगवान्', अवाछित हैं। अमेरिकन पाठ्यपुस्तक के लेखक, महर्षि दयानन्द सरस्वती (1824–1883) की अमर कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' 1882 से भी अनभिज्ञ रहे हैं। इस कृति में संसार के मुख्य 'मतों', 'पंथों', 'धर्मों' का तर्कसंगत विश्लेषण और क्रमबद्ध तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस कृति का संसार की लगभग प्रत्येक भाषा में अनुवाद हो चुका है और अंग्रेजी भाषा में इस कृति का 'लाइट ऑफ ट्रुथ' के नाम से प्रकाशन हुआ है [12]। इसमें स्पष्ट रूप से और बड़े जोरदार ढंग से 'मानव रूपी भगवान्–अवतारवाद' का खण्डन किया है। इसमें एक अन्य मत/रिलिजन–ईसाई मत की मुख्य मान्यता, विश्वास/धारणा 'भगवान् के पुत्र' की पूजा का भी विरोध किया गया है। हिन्दू पुनर्जागरण आन्दोलन के पितामह महर्षि दयानन्द सरस्वती की अद्वितीय और निष्पक्ष साहित्यिक कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' में सत्य की खोज के प्रति उनकी महान् उत्कण्ठा प्रदर्शित होती है। परन्तु उपर्युक्त भ्रांति–पूर्ण लेखों में, सत्यता प्रकट करने के लिए निष्पक्षता का नितान्त अभाव ही झलकता है।

9. प्राचीन ग्रन्थ, पुराणों [13] के प्रतिसन्दर्भो की ओर लेशमात्र भी ध्यान नहीं दिया गया। रामायण और महाभारत काल को निर्धारित करते समय थाई लोगों की विस्तृत सांस्कृतिक एन्थ्रोपॉलोजी के अध्ययनों और बाली, इण्डोनेशियाई लोगों की संस्कृति तथा उनके इतिहास की ओर भी कोई ध्यान नहीं दिया।

10. विश्व–स्तर पर 'एक अरब संख्या से भी ज्यादा संख्या वाले हिन्दुओं' का प्रतिनिधित्व करनेवाले और सात विभिन्न राष्ट्रों

में प्रकाशित होने वाली मासिक समाचार-पत्रिका 'हिन्दुइज़्म टुडे—आज का हिन्दू धर्म' द्वारा हाल ही (दिसम्बर, 1994) में प्रकाशित 'कालचक्र लेख' को भी जार्जिया उच्च विद्यालय की दसवीं की विश्व-साहित्य पाठ्यपुस्तक में सन्दर्भ नहीं दिया गया। [8]

11. आर॰सी॰ मजुमदार द्वारा रचित पुस्तिक 'द एनसिएंट हिस्ट्री ऑफ इण्डिया'/'भारत का प्राचीन इतिहास' [16] में महाभारत का काल 3102 ई॰पू॰ बताया गया है। यह पुस्तक भारत सरकार द्वारा स्वीकृत है और भारतीय विश्वविद्यालय इसे एक प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रंथ तथा शंका-समाधान के स्रोत के रूप में प्रयोग करते हैं। इसमें लिखित बहुत महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्यों की पूर्ण-रूप से अवहेलना कर दी गई है।

12. विश्व के एक अरब संख्या से भी ज्यादा संख्या वाले हिन्दू लोग, जार्जिया उच्च विद्यालय की दसवीं की विश्वसाहित्य की पाठ्यपुस्तक 'विश्व साहित्य पुस्तक' के अन्तर्गत भारतीय साहित्य अध्याय 'कालक्रम और ऐतिहासिक क्रमबद्धता' में दी गई व्याख्याओं की प्रामाणिकता को चुनौती देते हैं। यह पुस्तक पूरे अमेरिका में पढ़ाई जाती है और यह पाठ्यपुस्तक हाल्ट, राइनहार्ट और विंस्टन इनकॉर्पोरेशन द्वारा प्रकाशित की गई है। कृपया इस पुस्तक के प्रकाशक को इन अशुद्धियों को ठीक करने हेतु पत्र लिखें।

पता इस प्रकार है :

Harcourt Brace, Customer Service,
6277 Sea Harbour Dirve,
Orlando, Florida, 32887, USA.

इस प्रकार का अशुद्ध 'विश्व साहित्य' सम्पूर्ण पाश्चात्य जगत् में पढ़ाया जाता है। यह केवल अकेली घटना नहीं है। इन बुद्धिजीवियों की सुनियोजित नीति है—'किसी भी ऐसी विचार

धारा को जो इनकी धारणा के अनुरूप न हो, अविश्वसनीय बना कर, अपमानित करना है।'

वास्तव में 'विश्व साहित्य' को, किसी भी अन्य वैज्ञानिक कृति की भाँति, जिसमें तथ्यों, विरोधी विचारधाराओं और सिद्धांतों को निष्पक्षता से प्रस्तुत किया जाता है, सही करने का समय आ गया है। विश्वसाहित्य की पाठ्यपुस्तक के लेखकों ने, स्पष्ट रूप से, विज्ञान और पुरातत्त्व की खोजों की उपेक्षा की है। इन लेखकों ने, भारतीय और अन्य विद्वानों के युक्तिसंगत विचारों की भी अवहेलना की है। अतएव, इनके लेख अशुद्ध, पक्षपातपूर्ण और अप्रामाणिक हैं, भारतीय जनों को अमान्य हैं। अतः महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्यों की पूर्ण रूप से निष्पक्षता से प्रस्तुत करने हेतु लिखें :

State Superintendent of Schools, 2054 Twin Towers East Atlanta, Georgia 3034, USA.

शैक्षिक रूप से, इन अशुद्धियों का विद्यालयों और महाविद्यालयों में पढ़ रहे हमारे बच्चों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। हमारे बच्चों को सही कालक्रम ज्ञात है, फिर भी अध्यापक उनके अंकों को काट ही लेते हैं, क्योंकि अध्यापकों को वास्तविकता का ज्ञान नहीं है और शिक्षक पाठ्यपुस्तिका के अनुरूप ही पढ़ाते हैं। विद्यालयों और महाविद्यालयों में ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए शैक्षिक, मानव-शरीररचनाशास्त्र, पुरातत्त्व विज्ञान, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र और वैज्ञानिक दृष्टि से अवधारणाओं, अन्तर्विरोधों, प्रतिरोधों और सिद्धांतों की तथ्यों के आधार पर पुनः व्याख्या की जानी चाहिए।

स्रोतसूची–

1. योगी अरविन्द, आर्य, भाग 1, 1963.
2. डेविड फ्राली, गोड्ज, सेजिज, एण्ड किंग्स : एनसिएंट सीक्रेट्स ऑफ एनसिएंट वर्ल्ड सिविलाइजेशन, पैसेज

प्रैस, उटाह 1990.

3. स्वामी ज्योतिर्मयानन्द, 'विवेकानन्द–हिज गॉस्पल ऑफ मैन–मेकिंग विद ए गारलैण्ड ऑफ ट्रिब्यून, एण्ड क्रॉनिकल ऑफ हिज लाइफ एण्ड टाइम विद पिक्चर्स।' एम॰वी॰ नायडू स्ट्रीट, पंचवटी, चेटपुट, मद्रास–600031, इण्डिया, अक्तूबर 1986.
4. दीनबन्धु चन्दोरा, एम॰डी॰, हिन्दू धर्म वैदिक लाइट, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, भारत, नवम्बर 1981.
5. आई॰ रॉबर्टसन: सोशियालॉजी, थर्ड एडीशन, न्यूयार्क, 1987.
6. स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, 'ओरिजिनल होम ऑफ आर्यन्स' आर्यों का मूल निवास, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, जुलाई 1987.
7. डेविड फ्राले, दॅ मिथ ऑफ आर्यन इनवेजन ऑफ इण्डिया/भारत पर आर्यों के आक्रमण की भ्रान्ति, वाइस ऑफ इण्डिया पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1994.
8. टाइम–लाइन, हिन्दुइज़्म टुडे, हिमालय अकादमी, हवाई, यू॰एस॰ए॰, दिसम्बर 1994.
9. चार्ल्स आर॰ बुक्स, द हरे कृष्णाज इन इण्डिया, प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी प्रैस, एन॰जे॰ 1989.
10. के॰एन॰ कपूर, एज ऑफ महाभारत वार/महाभारत युद्ध का काल, वैदिक लाइट, नई दिल्ली, अप्रैल 1871.
11. के॰एन॰ कपूर, डॉन ऑफ इण्डियन हिस्ट्री/भारतीय इतिहास का प्रभात, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, इण्डिया, अप्रैल 1990.
12. महर्षि दयानन्द सरस्वती, सत्यार्थ प्रकाश, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, 1884.

13. परमहंस जगदीश्वरानन्द सरस्वती, श्रीमद् वाल्मीकि रामायण, गोविन्दराम हासानंद प्रकाशक, नई सड़क, दिल्ली-6, 1998.
14. 'वैस्ट्रन साइकियाट्रिस्ट', हिन्दुइज़्म टुडे, हिमालय अकादमी, हवाई, यू.एस.ए., सितम्बर 1991.
15. सगन, कार्ल, कॉसमोस एण्ड पेल ब्ल्यू डाट, ए॰ डिविजन ऑफ ह्यूमैन फ्यूचर इन स्पेस, द कॉमनवैल्थ क्लब ऑफ केलिफोर्निया, सान फाँसिस्को, यू॰एस॰ए॰, वॉल्यूम 89, जनवरी 16, 1995.
16. मजुमदार, आर॰सी॰; ई॰टी॰एल॰, एन एडवांस्ड हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, मैकमिलन, न्यूयार्क, यू॰एस॰ए॰, थर्ड एडीशन, 17/18, 1967.
17. जे॰सी॰ नेगी, 'इण्डस वैली सिविलाइजेशन डेस्ट्रॉएड बाई टेक्टानिक चेन्जेज', नेशनल जिओफिजिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट, हैदराबाद, इण्डियन एक्सप्रैस, प्रैस ट्रस्ट ऑफ इण्डिया, अप्रैल 5, 1999.
18. प्रोसीडिंग्स ऑफ 1996 इण्टरनेशनल कान्फ्रेंस ऑन 'रिविजिटिंग इण्डस-सरस्वती एज एण्ड एनसिएंट इण्डिया', शर्मा एण्ड घोष, वर्ल्ड एसोसिएशन फॉर वैदिक स्टडीज, अटलांटा, यू॰एस॰ए॰।
19. राजाराम तथा झा, 'वर्ल्ड्स ओलडेस्ट राइटिंग इन वैदिक'/ 'वेद विश्व की प्राचीनतम कृति है', द टाइम्स ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, गुरुवार, मई 13, 1999.
20. डॉ॰ जोनाथन मार्क केनोयर, ओलडेस्ट राइटिंग सिम्बल, इस्लामाबाद व्याख्यान, पाकिस्तान, मई 28, 1999, विस्कोनसिन, मेडिसन विश्वविद्यालय, यू॰एस॰ए॰।

कलाकार विनोद शर्मा द्वारा लेखक के निर्देशानुसार चित्रण

8

झलकियाँ
वैदिक-सनातन-हिन्दू धर्म की

यूनियन गिरिजाघर, एटलाण्टा, जार्जिया, यू॰एस॰ए॰ में सिडनी मेकगील की अनुमति से लेखक डॉ॰ दीनबन्धु चन्दोरा द्वारा **संशोधित हिन्दू धर्म की झलकियाँ :**

1. विभिन्न नाम

1. **वैदिक धर्म :** प्राकृतिक सिद्धान्तों पर आधारित कर्त्तव्य और उपदेश जो वेदों में निहित हैं, उनको जीवन में उतारना वैदिक धर्म कहलाता है।
2. **सनातन धर्म :** जीवन, समाज, सृष्टि और ब्रह्माण्ड को चलानेवाले शाश्वत प्राकृतिक सिद्धान्तों पर आधारित उपदेशों का पालन करना सनातन धर्म है।
3. **हिन्दू धर्म :** हिन्दूकुश तथा हिमालय पर्वतों की शृंखला के इर्द-गिर्द, एवं उसके पूर्व और दक्षिण दिशा में रहने वाले लोग, जो आदिकाल से उपर्युक्त वैदिक धर्म के सनातन उपदेशों और कर्त्तव्यों का पालन करते आ रहे हैं, हिन्दू कहलाते हैं और इन उपदेशों पर आधारित 'धर्म' को हिन्दू धर्म कहा जाता है।

2. धर्म

'धर्म' संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है : व्यक्ति के स्वयं, परिवार, समाज, प्रकृति, के प्रति न्यायोचित कर्त्तव्य। व्यावहारिक दृष्टि से इसका अर्थ ऐसे कार्य करने से है, जो व्यापक स्तर पर समाज के लिए हितकारी हो। 'धर्म' शब्द का कोई

समानान्तर अंग्रेजी–अनुवाद नहीं है। सबसे निकट का अंग्रेजी भाषा का शब्द 'रिलिजन' है जो कि सामान्य रूप से 'धर्म' शब्द के बदले में प्रयोग किया जाता है।

'धर्म' शब्द 'मत-मज़हबों' और 'रिलिजन' का पर्यायवाची शब्द नहीं है।

3. पुरुषार्थ : हिन्दू धर्म का संदेश

व्यक्ति अपनी उन्नति के लिए न्यायोचित प्रयासों को अपनाने में स्वतंत्र है, और पुरुषार्थ द्वारा सफलता प्राप्त कर अपने भविष्य का निर्माण कर सकता है। प्रत्येक व्यक्ति में लक्ष्य प्राप्त करने की पूर्ण क्षमता होती है, तथा वह पुरुषार्थ के द्वारा अपनी उचित आवश्यकताएँ/अभिलाषाएँ पूर्ण कर सकता है।

हिन्दू धर्म का मुख्य संदेश : *प्रत्येक व्यक्ति स्वयं पुरुषार्थ द्वारा लक्ष्य प्राप्त करने का सामर्थ्य रखता है, अत: अन्य व्यक्ति/बिचौलिए की कोई आवश्यकता नहीं है।*

4. आवश्यकताएँ/अभिलाषाएँ : तृप्ति की दो मूलभूत कामनाएँ–

A. i. सुख अर्थात् काम इच्छाएँ।

ii. धन अर्थात् अर्थ।

काम अर्थात् इच्छाओं को धन द्वारा प्राप्त/पूर्ण किया जा सकता है।

सदाचार द्वारा संचित धन से स्थायी सम्पत्ति तथा लौकिक सफलताओं को प्राप्त किया जा सकता है। सदाचार द्वारा संचित धन 'धर्म को ध्यान में रखकर' ही अर्जित किया जाता है।

काम अर्थात् इच्छाओं की पूर्ण तृप्ति के बाद, इच्छाओं से इतना लगाव नहीं रहता, अत: उन्हें अपने वश में करने अर्थात् जीतने के प्रयत्न से अन्तत: व्यक्ति स्वयं संयम प्राप्त कर लेने की आवश्यकता समझता है, और अपने जीवन के इस मोड़ में व्यक्ति सन्मार्ग/सद्बुद्धि का सहारा लेता है, जिसे 'धर्म' कहते हैं।

B. iii. सद्बुद्धि से सद्-विचारों की प्राप्ति होती है। सदाचार और सेवा 'धर्म' के अन्तरंग अंग हैं। 'धर्म' मानव को बोध अथवा आत्मज्ञान द्वारा मोक्ष-प्राप्ति हेतु जागृत करता है।

iv. इच्छाओं से निवृत्त होने पर सभी बन्धनों से मानव मुक्त हो जाता है। इसी को साधारण भाषा में 'मोक्ष की प्राप्ति' कहते हैं।

'काम, अर्थ, धर्म, और मोक्ष' की प्राप्ति न केवल सम्भव है बल्कि वेद में दिए गए मार्ग का अनुसरण करने से इन्हें वर्तमान जीवन में सुगमतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता है। धर्म से प्राप्त अर्थ, और अर्थ से क्रमशः एक के पश्चात् एक स्वतः सफलतापूर्वक प्राप्त होते रहते हैं, कारण जीवन का आधार 'धर्म' है, इनका सही क्रम भी 'धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष' है।

5. आत्मा

प्रत्येक व्यक्ति अथवा प्राणी के अन्दर एक अनंत प्रकाश-पुंज का केन्द्र-**'आत्मा'** है। प्रत्येक व्यक्ति को 'प्रकाश-पुंज आत्मा' का भान तथा 'परम चेतन ब्रह्म/परमेश्वर' जो सृष्टिकर्त्ता और विश्व-नियंत्रक है, उनको जानने के लिए सतत मनन करने की अति आवश्यकता है, अतः निम्नलिखित गूढ़ विचारों पर अनुभूति करें :

1. 'अनंत प्रकाश-पुंज के केन्द्र' का बोध अथवा ज्ञान प्राप्त करने हेतु चित्त की वृत्तियों को रोकना, स्वार्थ-परायणता से लोट-पोट अज्ञानता और अहंकार का जो आवरण है, उसको हटाना अत्यन्त आवश्यक है।
2. प्रकृति के सच्चे नियमों की अनुभूति करना ही स्वयं को पहचानना है। इसी आत्म-ज्ञान से 'मुक्ति-मार्ग' का ज्ञान होता है। इसी आत्म-ज्ञान को 'पतंजलि के अष्टांग योग मार्ग' द्वारा इसी जीवन में प्राप्त किया जा सकता है।

आर्य (वैदिक–सनातन) ग्रंथ माला क्रमांक

EXPANSION OF ĀRSA [*VEDIC-SANĀTAN*] SCRIPTURE
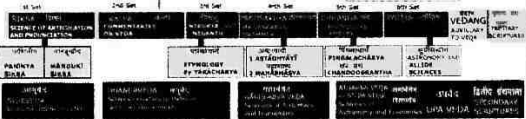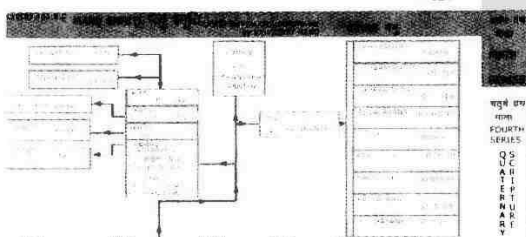
6. योग के आठ अंग

1. **यम** : अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।
2. **नियम** : शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान।
3. **आसन** : स्थिर सुखपूर्वक बैठना।
4. **प्राणायाम** : श्वास-नि:श्वास को रोकना।
5. **प्रत्याहार** : सांसारिक विषयों से मन को हटाना।
6. **धारणा** : मन को एक बिन्दु पर भौंहों के मध्य केन्द्रित करना।
7. **ध्यान** : मन को विचारशून्य बनाना।
8. **समाधि** : परमात्मा की उपस्थिति का बोध।

7. योग के मार्गों पर आचरण जीवन के निम्नलिखित चार आश्रमों में किया जा सकता है—

1. **ब्रह्मचर्य आश्रम** : प्रथम आश्रम, विद्यार्थी जीवन, 25 वर्ष,
2. **गृहस्थ आश्रम** : द्वितीय आश्रम, गृहस्थ जीवन, 25 से 50 वर्ष,
3. **वानप्रस्थ आश्रम** : तृतीय आश्रम, सेवा-निवृत्ति की योजना, और जीवन के लक्ष्यों को पूर्ण करने की अवस्था, 50 से 75 वर्ष,
4. **संन्यास आश्रम** : चतुर्थ और अन्तिम आश्रम, परम शान्ति की प्राप्ति के लिए समाज की नि:स्वार्थ सेवा, पूर्ण मोहभंग और समस्त सांसारिक त्याग, 75 से 100 वर्ष।

8. धार्मिक ग्रंथ

अ . मूल धार्मिक ग्रंथ : वेद

उपर्युक्त सभी व्याख्याओं का आधार वेद हैं। वेद का अर्थ

'ज्ञान' है। वेद की अनुभूति सृष्टि–रचना के आरम्भ में चार परम समाधिस्थ ऋषियों को हुई थी। यह वैदिक ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मौखिक उच्चारण (पाठ) द्वारा प्राप्त होता रहा। मौखिक उच्चारण (पाठ) की प्रक्रिया को श्रवण और वेदों को श्रुति कहा जाता है।

i. ऋग्वेद की अनुभूति **'अग्नि'** ऋषि को हुई थी।

ii. यजुर्वेद की अनुभूति **'वायु'** ऋषि को हुई थी।

iii. सामवेद की अनुभूति **'आदित्य'** ऋषि को हुई थी।

iv. अथर्ववेद की अनुभूति **'अंगिरा'** ऋषि को हुई थी।

चार वेदों के 20,349 मंत्र हैं। आदि काल में जब इन मंत्रों को पुस्तक के रूप में लिखा गया था, तो 'संहिता' नाम दिया गया। केवल 'संहिता' को ही वेद कहा जाता है।

आ. सहायक धार्मिक ग्रंथ

(1) उपवेद

सब सत्य विद्या, कला और विज्ञान के भंडार 'उपवेद' का उद्‌भव वेदों से हुआ। ये निम्न हैं :

i. **आयुर्वेद**—आयुर्वेद की उत्पत्ति ऋग्वेद से हुई है। इसमें आयु, स्वास्थ्य और उपचार–विज्ञान निहित है।

ii. **धनुर्वेद**—धनुर्वेद की उत्पत्ति यजुर्वेद से हुई। इसमें नागरिक तथा सैन्य विज्ञान, सुरक्षा और राजकार्य निहित हैं।

iii. **गान्धर्ववेद**—गान्धर्ववेद की उत्पत्ति सामवेद से हुई। इसमें संगीत–विज्ञान, कलाएँ, साहित्य और दर्शन निहित हैं।

iv. **अर्थवेद**—इसकी उत्पत्ति अथर्ववेद से हुई। इसे **शिल्पवेद** भी कहा जाता है। इसमें विज्ञान, खगोल, ज्योतिष, यांत्रिकी, गणित, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान निहित हैं।

(2) अंग/वेदांग

वेदों की भाषा और साहित्य को समझने के लिए **'अंग/वेदांग'**

आवश्यक हैं। **'अंगों'** में शब्द–विन्यास और व्याकरण निहित हैं। ये 6 पुस्तक–मालाएँ हैं जिनका वर्णन नीचे दिया गया है :

प्रथम पुस्तकमाला : 'शिक्षा'—सही शब्द–संयोग और उच्चारण का विज्ञान। इसमें पाणिनीय, प्रातिशाख्य और मांडुकी शिक्षा निहित हैं।

द्वितीय पुस्तकमाला : कल्प (वेदों की समालोचना)

1. **ब्राह्मण ग्रंथ :** इनमें धार्मिक क्रियाएँ और संस्कार–कर्म निहित हैं तथा ये वैदिक मंत्रों की व्याख्या करने में भी सहायक हैं। प्रत्येक वेद के निर्धारित समालोचनात्मक ब्राह्मण–ग्रंथ हैं। ऋग्वेद के ऐतरेय और सांख्य, यजुर्वेद का शतपथ, सामवेद का ताण्ड्य ब्राह्मण और अथर्ववेद का गोपथ ब्राह्मण समालोचना–ग्रंथ हैं।
2. **सूत्रग्रंथ :** ये धार्मिक संस्कारों के काव्यात्मक ग्रंथ हैं और इनमें मुख्य गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, श्रौतसूत्र, और शुल्बसूत्र हैं। आश्वलायन, गोभिल, पारस्कर, कौषीतकी, कात्यायन और बौधायन भी मान्य सूत्रग्रंथ हैं।
3. **आरण्यक :** ये ब्राह्मण–ग्रंथों के सहायक ग्रंथ हैं इनके विषय संस्कार तथा आध्यात्मिक चिन्तन हैं। आरण्यक–ग्रंथ ब्राह्मण–ग्रंथों के ही भाग हैं, जो कि आध्यात्मिक ज्ञान की मुख्यतया व्याख्या करते हैं।

तृतीय पुस्तकमाला : निरुक्त और निघण्टु : यास्काचार्य द्वारा वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति–विषयक (शब्दकोष और भाषा–विज्ञान) व्याख्या।

चतुर्थ पुस्तकमाला : प्रातिशाख्य अथवा व्याकरण : अष्टाध्यायी और महाभाष्य व्याकरण—यौगिक शब्द, संयोजक और अन्य धातु–पाठ; यौगिक शब्द; गणपाठ : संयोजक; उणादिकोष : उपसर्ग और प्रत्यय।

पंचम पुस्तकमाला : छन्द : पिंगलाचार्य का छंदोग्रंथ, छंदविद्या और काव्यरचना की कला तथा विज्ञान बहुत प्रसिद्ध हैं।

षष्ठ पुस्तकमाला : ज्योतिष : खगोल विज्ञान, अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित, भूगोल, भौतिक विज्ञान और भूगर्भ-विज्ञान, उदाहरणार्थ **'सूर्य सिद्धांत'**।

सत्य सनातन नियम : हीरे, मोती, अन्य 'कीमती धातुएँ', 'कीमती पत्थर' कभी भी कर्मफल को बदल नहीं सकते। नक्षत्र विद्या ज्योतिष-विद्या नहीं है। कोई भी 'कीमती पत्थर' भविष्य के किसी परिणाम अथवा दुष्प्रभावों को दूर नहीं कर सकता।

(3) उपनिषद् :

उपनिषद् का अर्थ है भगवान् के समीप बैठना। उपनिषद्-ग्रंथों में आत्मा, परमात्मा और ईश्वर-प्राप्ति के आध्यात्मिक और दार्शनिक विषयों सम्बंधी उल्लेख हैं। निम्नलिखित 11 प्रामाणिक उपनिषद् हैं :

i. **ईश :** ईश्वर-विषयक।
ii. **केन :** 'किसको किसने शासित किया' विषयक।
iii. **कठ :** जिज्ञासु मस्तिष्क और आत्मा विषयक सामग्री।
iv. **प्रश्न :** महात्मा पिप्पलाद द्वारा जिज्ञासु प्रश्न और उत्तर।
v. **मुण्डक :** आत्मा और परमात्मा विषयक चर्चाएँ।
vi. **माण्डूक्य :** आत्मा और परमात्मा विषयक चर्चाएँ।
vii. **ऐतरेय :** पवित्र-आत्मा विषयक चर्चाएँ।
viii. **तैत्तिरीय :** आत्मा और आत्म-प्रदेश विषयक गुणात्मक चर्चाएँ।
ix. **छांदोग्य :** मोक्ष और ईश्वर-प्राप्ति विषयक चर्चाएँ।
x. **बृहदारण्यक :** स्वयं और सृष्टि के सापेक्ष सम्बन्धों की चर्चाएँ।
xi. **श्वेताश्वतर :** सृष्टि-रचना के कारण और वृत्तान्त और आत्मा, परमात्मा तथा ईश्वर-प्राप्ति का विज्ञान।

(4) उपांग/षड् दर्शन :

जीवन को कैसे जियें, संसार को कैसे देखें, तथा सृष्टि की

रचना कैसे हुई—जो शास्त्र इन प्रश्नों का उत्तर दिखाते हैं, उनको दर्शन कहते हैं। इस प्रकार का चिन्तन 6 निम्नांकित पुस्तकों में वर्णित है जिन्हें उपांग भी कहते हैं–

i. **पूर्वमीमांसा अथवा मीमांसा दर्शन :** जैमिनी द्वारा विश्लेषित और प्रयोग- विज्ञान से आत्मा और परमात्मा–दर्शन, कर्म का विश्लेषण, वेद का नित्यत्व।

ii. **वैशेषिक दर्शन :** प्रशस्तपाद की समालोचना सहित कणाद -कृत गुणवत्ता, सामान्यता, पदार्थों की अद्वितीयता, परमाणु तथा अन्य जटिल विषयों, अस्तित्वहीनता, अभाव अथवा पदार्थ -ह्रास सहित सृष्टि–रचना, और समय के विज्ञान द्वारा प्रभु और प्रकृति के बारे में जीवन–दर्शन।

iii. **न्याय दर्शन :** वात्स्यायन की समालोचना-सहित गौतम–कृत तर्क, विवेक और यथार्थता का विज्ञान से जीवन–दर्शन।

iv. **योग दर्शन :** पतंजलि -कृत पुरुषार्थ और ईश्वर- प्राप्ति के विज्ञान से सुगम जीवन प्राप्त कर सशरीर आत्मा और मन से प्रभु-दर्शन।

v. **सांख्य दर्शन :** कपिल- कृत जड़ और चेतन के विज्ञान से जीवन–दर्शन।

vi. **ब्रह्मसूत्र, उत्तर–मीमांसा अथवा वेदान्त दर्शन :** बादरायण–कृत क्रिया, जड़ पदार्थ, औपचारिकता और सृष्टि–रचना के अन्तिम कारण ब्रह्म के विज्ञान से जीवन–दर्शन। **बादरायण का दूसरा नाम व्यास भी है।**

(5) स्मृति

वेद के आधार पर गठित जिस विधान को कण्ठस्थ किया जाता है, उसे स्मृति कहते हैं। कानून–प्रदाता मनु ने ऐसे सभी प्राकृतिक नियमों और सिद्धान्तों की व्याख्या की है जो कि स्वयं, परिवार, समाज और विस्तृत रूप से मानवता को प्रभावित करते

हैं। मनु की कृति विश्व की अनेक सभ्यताओं के लिए प्रामाणिक कानूनों का एक स्रोत बनी। सभी स्मृतियों में प्रामाणिक सर्वप्रसिद्ध स्मृति 'मनुस्मृति' है।

(6) नीति शास्त्र

सर्वप्रसिद्ध नीतिशास्त्र विदुर-नीति, चाणक्य-नीति और भर्तृहरि द्वारा रचित 'नीति शतकम्' हैं।

(7) आदिकाल का प्राचीन इतिहास

पुराण (सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ) : कुल 18 पुराण हैं। पुराण-ग्रंथ 'जीवन के गूढ़ विषयों और भ्रान्तियों पर व्याख्या' आलंकारिक तथा लाक्षणिक गाथाओं द्वारा करते हैं। महाभारत से पूर्व विभिन्न राज्यों की राज-वंशावलियों की विवेचना भी पुराणों में की गई है।

(8) ऐतिहासिक महाकाव्य

i. **रामायण :** त्रेतायुग में महान् कवि वाल्मीकि द्वारा 18,149,000 ई॰पू॰ रचित श्री राम की जीवन-गाथा।

ii. **महाभारत :** द्वापर युग में श्री व्यास-कृत प्राचीन बृहत् भारत के बृहत् विश्वयुद्ध की ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन, 3,139 ई॰पू॰। विश्वयुद्ध 'महाभारत' में श्री कृष्ण ने लक्ष्य सफल करने हेतु सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

(9) गीता

श्री कृष्ण ने विशुद्धता और श्रेष्ठता के साथ उपर्युक्त सूचीबद्ध धार्मिक ग्रन्थों के ज्ञान को सारगर्भित रूप से गीता में सफलतापूर्वक दर्शाया है। शाब्दिक रूप से गीता का अर्थ होता है 'गीत गाना'।

(10) सत्यार्थप्रकाश तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

इन अद्वितीय पुस्तकों में सभी हिन्दू धार्मिक ग्रंथों और उपदेशों का सार समाहित है। इसमें संसार के सभी 'मतों/पंथों/धर्मों और रिलिजनों' का तुलनात्मक अध्ययन भी है। बंकिम चन्द्र, ईश्वर-

चन्द्र विद्यासागर, और रवीन्द्रनाथ टैगोर के पिता देवेन्द्रनाथ टैगोर के कहने पर, स्वामी दयानन्द ने उन लोगों के लिए जो हिन्दू धर्म के शुद्ध रूप को जानना चाहते हैं, एक पुस्तक लिखना आरम्भ किया। हिन्दू धर्म पर यह पुस्तक ई॰ सन् 1877 में 'सत्यार्थ प्रकाश' के नाम से प्रकाशित हुई। इस रचना ने लोगों में बढ़े हुए अंध-विश्वास के भाव को कम किया और हिन्दू धर्म के वास्तविक रूप को प्रस्तुत किया। 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों के सिद्धांत प्रमाण-सहित प्रस्तुत किए।

(11) काल गणना–पंचांग

ज्योतिष तथा खगोल-विद्या सम्बन्धी गणनाओं का मान्य ग्रंथ 'सूर्यसिद्धान्त' है। हिन्दू धर्म में विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं का सन्दर्भ 'विभिन्न ग्रहों और नक्षमण्डलों की खगोलीय स्थिति' ही है। खगोलीय सन्दर्भों से भविष्य में भी इन घटनाओं की खगोलीय काल की पुनर्गणना की जा सकती है। उदाहरणार्थ, वर्तमान कलियुग का प्रारम्भ रात को 2 बजकर 27 मिनट और 30 सैकंड पर, प्रथम वर्ष 'प्रमाथि' के प्रथम दिवस से प्रथम महीना आरम्भ हुआ था। उस समय नक्षत्रमण्डलों के साथ सात ग्रहों का योग था। यह वह क्षण था जब श्री कृष्ण ने नश्वर देह को त्यागा, तब से ही वर्तमान कलियुग प्रारम्भ हुआ। ई॰ सन् 2005 तक गणना करने पर वर्तमान कलियुग 5107 वर्ष का होता है। फ्रांसीसी खगोल वैज्ञानिक बैली ने इसकी पुनर्गणना कर इसे सही सिद्ध किया है।

9. तीन मूलभूत सत्ताएँ

1. ईश्वर

i. सर्वशक्तिमान्, सर्वाधार, सर्वान्तर्यामी, सर्वगुणसम्पन्न, अपरिवर्तनीय, निराकार, अजन्मा, दयालु, परम सत्य 'ब्रह्म' अवर्णनीय है, पर इस जीवन में प्रभु अनुभूति से दूर नहीं है।

ii. ईश्वर के बहुआयामी गुणों का चित्रात्मक और प्रतीकात्मक

रूप से विभिन्न प्रार्थनाओं में वर्णन होता है। प्रभु के असंख्य गुण सामान्य जन को समझाने के लिए ईश्वर के विभिन्न गुणों की 33 कोटि अर्थात् 33 करोड़ प्रकार के देवी-देवताओं के रूप में कल्पना की गई है। इस प्रकार 'सार्वभौम त्रय' से ईश्वर के तीन मूलभूत गुणों-'सृष्टि रचयिता, सर्वव्यापक, सृष्टि-पालक और प्रलयकारक/कल्याणकारक' के रूप में क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु और महेश से सम्बोधित किया है।

2. आत्मा :

आत्मा अर्थात् जीवात्मा : जीव की चेतना और अस्तित्व की ऊर्जा है।

i. **आत्मा** की यात्रा एक साधारण प्रकार के जीवन से आरम्भ होकर, जन्म और पुनर्जन्म से होती हुई तब तक चलती रहती है, जब तक इसे मानव-शरीर नहीं मिलता। इस प्रक्रिया को पुनर्जन्म अथवा देहधारण कहते हैं। उदाहरणार्थ 'पुनर्जन्म-जन्म-पुनर्जन्म का क्रम' अनन्त काल तक, अर्थात् जब तक मोक्ष की प्राप्ति न हो, चलता ही रहता है।

ii. आत्मा की **यात्रा निष्काम कर्म**, कर्मफल के नियमों, कारण और प्रभाव, तथा 'जैसी करनी, वैसी भरनी' के सिद्धान्त द्वारा निर्धारित होती है।

iii. आत्मा को अपनी इच्छानुसार कर्म करने की पूर्ण स्वतन्त्रता है।

iv. आत्मा मनुष्य के रूप में धर्म-मार्ग का अनुसरण कर मोक्ष-प्राप्ति की ओर आगे बढ़ती है।

v. अन्त में प्रत्येक आत्मा पहले कहे गए योग-मार्गों/पुरुषार्थों के माध्यम से, एक निश्चित काल के लिए, ब्रह्म में लीन/संयुक्त हो सकती है।

3. प्रकृति

प्रकृति जड़ पदार्थ है। प्रकृति के अग्रांकित रूप/तत्त्व हैं :

1 ठोस : जैसे पृथिवी, 2 जल : जैसे द्रव पदार्थ, 3 अग्नि : जैसे शक्ति, 4 वायु : जैसे हवा इत्यादि, 5 आकाश : जैसे अन्तरिक्ष। सारा दृश्य जगत इन पंचभूतों से बना है।

10. तीन मूल तत्त्व एवं उनकी विशेषताएँ

1. ब्रह्म की तीन मूलभूत विशेषताएँ हैं जिन्हें सच्चिदानन्द कहा जाता है :
   i. सत् अथवा अस्तित्व,
   i. चित् अथवा चेतना,
   iii. आनन्द अथवा परम सुख।
2. आत्मा की दो मूलभूत विशेषताएँ हैं :
   i. अस्तिता।
   i. चेतनता, पर परम सुख से वंचित।
3. प्रकृति की केवल एक ही मुख्य विशेषता है : अस्तिता। वह परम सुख और चेतनता से वंचित है।

11. तत्त्व-ज्ञान सम्बन्धी अवधारणाएँ

1. **यथार्थता (Reality) अथवा वास्तविकता : तीन प्रकार से कहने का ढंग :**
   i. **द्वैतवाद** : दो चेतन सत्ताएँ 1. जीवात्मा तथा 2. ब्रह्म।
   ii. **अद्वैतवाद** : अर्थात् परमात्मा एक ही है। उसके जैसा दूसरा कोई नहीं है–उसका द्वित्व नहीं है अर्थात् अद्वैत है।
   iii. **त्रैतवाद** : तीन स्वतन्त्र सत्ताओं का अस्तित्व
      1) प्रकृति
      2) आत्मा
      3) परमात्मा अथवा ब्रह्म।
2. **संसार और ब्रह्माण्ड :**
   i. **संसार** : यथार्थ है; वह मिथ्या नहीं है। जगत् आत्मा की पुनर्जन्म-यात्रा के लिए प्रशिक्षण-स्थल है।

ii. **प्रलय** : ब्रह्म की कल्याणकारक लीला, एक के बाद एक लगातार प्रक्रिया, जैसे बीज का प्रलय होने से अंकुर व पौधे की सृष्टि होती है।

12. गुण/प्रवृत्ति

'प्रवृत्ति' : व्यक्ति के आन्तरिक मूलभूत गुण जो कि जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करते हैं, उनको 'प्रवृत्ति' की संज्ञा दी गई है। आन्तरिक मूलभूत गुण जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करते हैं, विशेषरूप से निम्नलिखित प्रवृत्तियों को :

1. **यज्ञ** : व्यक्ति द्वारा तपोमय, परोपकारी, पवित्र और निःस्वार्थ श्रद्धा-सहित त्यागमय सेवा-प्रयास 'यज्ञ' है।
2. **निष्काम कर्म** : व्यक्ति द्वारा किया गया प्रत्येक 'परोपकारी निष्काम कार्य' ही कर्म कहलाता है।
3. **धर्म** : ऐसे न्यायोचित दैनिक कर्त्तव्य, जिनके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति जीवन में समाज के साथ-साथ आगे बढ़ता है।
4. **सुलभ जीवन-पद्धति** : सादा आचार-विचार और रहन-सहन से सात्त्विक खान-पान अपनाकर कर्मशील-पुरुषार्थी बन, सद्भाव-सहयोग द्वारा परोपकार और दान करते हुए, धर्म-परायणता अपनाते हुए, पतंजलि-कृत अष्टांग-योग और मनु द्वारा निर्दिष्ट दैनिक पंच महायज्ञ करते हुए ईश्वर-प्राप्ति करने हेतु सुगम जीवन जीना।

उपर्युक्त आन्तरिक मूलभूत गुण अर्थात् प्रवृत्तियाँ नीचे दिए गए तीन सिद्धांतों द्वारा प्रभावित होती हैं :

1. **सत्त्व गुण** : व्यक्ति जिस पवित्रता, सद्बुद्धि और ज्ञान की वृद्धि करता है, उस आन्तरिक मूलभूत गुण को **'सत्त्व गुण'** कहते हैं। सात्त्विक व्यक्ति गुणवान्, समृद्ध और न्यायप्रिय होते हैं, जिससे कि पवित्र कर्मों के प्रति लगन बढ़ती है। इसका दूसरा नाम सुख भी है।
2. **रजस्** : चंचलता, लालसा और उत्तेजना को बढ़ानेवाला

आर्ष ग्रंथों की झलकियाँ

वैदिक-सनातन-हिन्दू धर्म का सार : तुलनात्मक अध्ययन का एक अद्भुत शोधग्रंथ : सत्यार्थप्रकाश तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

रामायण
महाभारत
गीता

१ मीमांसा
२ वैशेषिक
३ न्याय
४ अष्टांग योग
५ सांख्य
६ वेदान्त

उपनिषद्
सूत्र ग्रंथ
आरण्यक ग्रंथ
ब्राह्मण ग्रंथ
अंग

मनुस्मृति
उपवेद

आयुर्वेद
ऋग्वेद
धनुर्वेद
यजुर्वेद
अथर्ववेद
अर्थवेद
सामवेद
गान्धर्ववेद

ओ३म्

आन्तरिक मूलभूत गुण **'रजस्'** कहलाता है। राजसिक व्यक्ति प्राय: निरुद्देश्य गतिविधियों में अत्यधिक संलग्न होकर स्वार्थी, अहंकारी अथवा आत्माभिमानी बन जाते हैं, जिससे कि आत्मप्रशंसा वाले विचारों, प्रयासों तथा कार्यों को बल मिलता है। रजस् दु:खात्मक गुण है।

3. **तमस्** : जो आन्तरिक मूलभूत गुण अज्ञानता और मन्दता की वृद्धि करता है, वह **'तमस्'** कहलाता है। तामसिक व्यक्ति जड़ता, स्वार्थीपन और असत्यप्रियता से ग्रसित होता है, जिससे कि दुष्टता अथवा हानिकारक विचारों की समाज में वृद्धि होती है। इसका दूसरा नाम दु:ख है। तमस् गुण मोहात्मक है।

13. दैनिक जीवन में वैदिक-सनातन-हिन्दू धर्म की झलकियों का व्यावहारिक उपयोग

हिन्दू लोग प्रकृति के सनातन सिद्धान्तों का अनुसरण करते हैं। इसलिए अंधविश्वासों और मध्यस्थों अथवा धर्म के ठेकेदारों का हिन्दू धर्म में कोई स्थान नहीं है। उनका आदर्श 'वसुधैव कुटुम्बकम्' है अर्थात् सम्पूर्ण संसार एक बृहत् परिवार है। सभी संस्कृतियों और भाषाओं के माध्यम से भगवान् को ऊपर कहे हुए अष्टांग योग के द्वारा जाना जा सकता है। भगवान् संसार के सभी लोगों के कल्याण के लिए समान उपदेश करता है। इसलिए सौहार्द और सहनशीलता हिन्दू धर्म के मूलभूत घटक हैं।

पंच महायज्ञ–ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेव, अतिथियज्ञ, केवल स्वयं के जीवन को ही श्रेष्ठतर नहीं बनाते अपितु सम्पूर्ण समाज के प्रति दायित्व को पूर्ण करते हैं।

यदि हर व्यक्ति कम से कम 'बलिवैश्वदेव यज्ञ' प्रतिदिन करे तो समाज में कोई भूखा और गरीब नहीं रह सकता। इस यज्ञ का मतलब ही यह है कि 'अपने ऊपर निर्भर रहनेवालों की देखभाल करना।' समाज के सभी अंगों की देखभाल अगर प्रत्येक व्यक्ति

करता है, तो साम, दाम, दंड, भेद की नीति से भी, विदेशी कभी हिन्दुओं का धर्म-परिवर्तन करने में सफल नहीं हो सकते और अभी जो परिस्थितिवश धर्म-परिवर्तन हो रहा है उसकी भी रोकथाम हो सकती है।

अग्नि सभी पदार्थों को प्राकृतिक अवस्था में विभक्त कर देती है, इसलिए हिन्दू मृतक शरीर का दाह करते हैं ताकि सभी तत्त्व उनकी मूलभूत प्राकृतिक अवस्था को शीघ्रता से ग्रहण कर लें।

अनन्त आनन्द की समाधि—मोक्ष को इसी जीवन में बिना मरे, पतंजलि के अष्टांग योग-मार्ग का अनुसरण कर प्राप्त किया जा सकता है। जीवन का उद्देश्य निष्काम कर्म करते हुए 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' के आदर्श को जीवन में ढालना है।

9

पृथिवी की आयु

(AS OF THURSDAY FEB. 17, 2005)

खगोलीय गणनाओं के अनुसार एक कल्प एक हजार चतुर्युगियों में विभाजित है। प्रत्येक चतुर्युगी में चार युग निहित होते हैं : सत्, त्रेता, द्वापर और कलि, जिनमें कि क्रमश: 1,728,000, 1,296,000, 864,000 और 432,000 वर्ष होते हैं। वेद, मनुस्मृति, सूर्य सिद्धान्त, महाभारत और पुराण, सभी इस गणना को सही सिद्ध करते हैं। सूर्य सिद्धांत के अनुसार वर्तमान कलियुग सातवें मन्वन्तर वैवस्वत की 28वीं चतुर्युगी का चौथा युग है। निम्न तालिका सूर्यसिद्धांत और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के अनुसार पृथिवी की आयु दर्शित कराती है :

युग	बीते वर्ष	कुल बीते वर्ष
6 मन्वन्तर	6x306,720,000	1,840,320,000
7 मन्वन्तर की 7 संधि	1,728,000	12,096,000
सातवें मन्वन्तर वैवस्वत की 27वीं चतुर्युगी	27x4,320,000	116,640,000
28वीं चतुर्युगी के सत् त्रेता और द्वापर	1,728,000+1,296,000+864,000	3,888,000
कलियुग 2005 ई॰ तक	5,107	5,107
कुल योग		**1,972,949,107**

Thursday Feb. 17, 2005 अर्थात् विक्रम संवत्, माघ शु॰ 9 को 5107 कलियुग/ युगाब्द संवत् आरम्भ होता है। Saturday April 9, 2005 अर्थात् शु॰ 1/वर्ष प्रतिपदा शनिवार चैत्र को विक्रम संवत् 2062 तथा शक संवत् 1927 आरम्भ होता है।

10

पुरातन इतिहास क्रमांक

वैदिक संस्कृति का अरुणोदय

* 1,555,219,729,491 पू॰	ब्रह्माण्ड प्रारम्भ, ब्रह्म संवत्।
* 1,97,29,49,107 ई॰पू॰	सृष्टि संवत्, मनुष्यों और जीवों की रचना। प्रथम स्वयंभू मन्वन्तर का शुभारम्भ, समाधिस्थ चार ऋषियों को वेदों की दिव्य अनुभूति।
* 1,654,131,107 ई॰पू॰	दूसरे स्वारोचिष मन्वन्तर का आरम्भ।
* 1,347,11,107 ई॰पू॰	तीसरे औत्तमि मन्वन्तर का आरम्भ।
* 1,040,691,107 ई॰पू॰	चौथे तापस मन्वन्तर का आरम्भ।
* 733,971,107 ई॰पू॰	पाँचवें रैवत मन्वन्तर का आरम्भ।
* 427,251,107 ई॰पू॰	छठे चाक्षुष मन्वन्तर का आरम्भ।
* 120,531,107 ई॰पू॰	सातवें वैवस्वत मन्वन्तर का आरम्भ।
* 18,149,107 ई॰पू॰	श्रीराम का समय त्रेतायुग (स्वामी जगदीश्वरानंद)।
* 3,138 ई॰पू॰	महाभारत युद्ध।
* 3,102 ई॰पू॰	कलियुग आरम्भ।
* 2,500 ई॰पू॰	तक्षशिला और नालंदा विश्व-विद्यालय।
* 1,801 ई॰पू॰	बुद्ध का निर्वाण (के॰एन॰ कपूर)
* 1,807 ई॰पू॰	बुद्ध का निर्वाण (कोटा वेंकटाचलम्)।
* 1,472 ई॰पू॰	अशोक का राजतिलक (श्री राम साठे)।

* 600 ई॰पू॰	महावीर स्वामी का जन्म।
* 509 ई॰पू॰	आदि शंकराचार्य का जन्म (के॰एन॰ कपूर)।
* 491 ई॰पू॰	आदि शंकराचार्य का जन्म (श्री राम साठे)।
* 57 ई॰पू॰	विक्रमी संवत् का आरम्भ (महाराजा विक्रमादित्य की मध्य एशिया के शकों पर विजय)।
* 27 ई॰पू॰	अगस्तस-प्रथम रोमन सम्राट्।
* ई॰पू॰=ईसा-पूर्व सन्	
7 ई॰	नजरेथ के जीसस क्राइस्ट (ईसु) का सम्भावित जन्म (लाइफ मेगजिन, दिसम्बर 1999)।
78 ई॰	शक संवत् का आरम्भ।
1192 ई॰	भारत में मुस्लिम शासन का आरम्भ।
1674 ई॰	शिवाजी द्वारा स्वतन्त्र हिन्दू राष्ट्र 'महाराष्ट्र' की स्थापना!
1824 ई॰	महर्षि दयानन्द का जन्म।
1857 ई॰	भारत का प्रथम स्वतन्त्रता-संग्राम आरम्भ।
1877 ई॰	सत्यार्थ प्रकाश की रचना।
1926 ई॰	स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान।
1942 ई॰	आजाद हिन्द सेना की स्थापना।
1947 ई॰	भारत का विभाजन और अंग्रेजी राज से स्वतन्त्रता।
1948 ई॰	लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल का निधन।

बुद्ध और महावीर काल :

अंग्रेजी शासनकाल में एक जर्मन मिशनरी मैक्सम्यूलर ने भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन का कार्य किया, ताकि भारतीय इतिहास को ईसाई 'मत-रिलिजन' के सुझाए विश्वासों के अनुसार ढाला जा सके। एक और विख्यात अंग्रेज विद्वान् सर विलियम जॉन्स ने भी इस कार्य में उनकी मदद की। सर जॉन्स और मैक्सम्यूलर ने परस्पर सहमति से पारम्परिक भारतीय पौराणिक तथ्यों, नेपाल और कश्मीर, मगध के शिशुनाग और अन्य राजवंशों जैसे कि सूर्यवंश के कालक्रमों को नकार दिया, क्योंकि इनको मान्यता मिलने पर उनके ईसाई मत के विश्वास कमजोर पड़ जाते। बुद्ध इन्हीं राजवंशों से सम्बन्धित थे।

ईसाई मत के अनुसार और आयरलैण्ड के आर्चबिशप रेव॰ जान अशर द्वारा 1664 ई॰ में की गई गणना अनुसार बतलाया गया कि इस ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति 23 अक्तूबर, 4004 ई॰पू॰ को प्रातः चार बजे हुई। अन्य प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार और विद्वान् श्री बी॰सी॰ गोल्डस्टकर के अनुसार मैक्सम्यूलर और सर विलियम जॉन्स ने भी आर्चबिशप के ईसाई सृष्टि-रचना के सिद्धांत का समर्थन किया। उस समय अंग्रेजों का शासन था, इसलिए वे संसारभर में अपने विचारों को थोप सकते थे। अधिकतर विद्वानों ने मैक्सम्यूलर और सर विलियम जॉन्स की प्रस्तावित इतिहास की विकृत कालक्रम-गणना को बिना कोई विशेष निरीक्षण किए स्वीकार कर लिया। भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने मैक्सम्यूलर और सर विलियम जॉन्स के पक्षपातपूर्ण विचारों के आधार पर भारतीय इतिहास की कई महत्त्वपूर्ण घटनाओं की तिथियाँ निश्चित कर दीं। ऐसा करने पर उन्होंने विकृत, भ्रष्ट और भ्रान्तिपूर्ण आधुनिक साहित्य की भरमार कर दी जो कि इन्हीं के विकृत तथ्यों को मज़बूत करें और अधिक बढ़ावा दें। जिसने भी इन पक्षपातपूर्ण विचारों का विरोध किया, उसे आधारहीन कहकर उन सबका सामाजिक, शैक्षणिक बहिष्कार कर, अपमानित भी किया।

तब से लेकर आज तक पाठ्यक्रमों में पक्षपातपूर्ण तथ्यों का

ही बोलबाला रहा है, उदाहरणार्थ - 1947 में भारत की स्वतन्त्रता के तुरन्त पश्चात् प्रसिद्ध विद्वान् और इतिहासकार श्री कोटा वेंकटाचलम् ने कांग्रेस को भारतीय इतिहास का शुद्ध और सही कालक्रम भेजा। उसने इस विषय पर अध्ययन और चर्चा करने की प्रार्थना की। दुर्भाग्य से भारतीय इतिहास कांग्रेस ने तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू के दबाव के कारण इस शोध को पूर्ण रूप से खारिज कर दिया।

पौराणिक और बौद्ध साहित्य के अनुसार बुद्ध का निर्वाण मगध के शिशुनाग–राजवंश के राजा अजातशत्रु के शासनकाल में हुआ। बुद्ध शिशुनाग-राजवंश के 31वें/33वें राजा अजातशत्रु के समकालिक थे। बुद्ध का जन्म 1887 ई॰पू॰ हुआ था; बुद्ध को 35 वर्ष की आयु में ज्ञान प्राप्त हुआ था। उन्होंने अपने जीवन के शेष 45 वर्षों में अपने अनुभवों के आधार पर दिव्य सदुपदेश किया। जब 1814 ई॰पू॰ में अजातशत्रु का राज्याभिषेक हुआ, उस समय बुद्ध की आयु 72 वर्ष थी। वे 80 वर्ष तक जिए। अत: उनका निधन 1807 ई॰पू॰ में हुआ। इसके विपरीत भारत सरकार ने 1956 ई॰ में बुद्ध के जन्म की पच्चीस सौवीं वर्षगाँठ मनाई। श्री राम साठे के अनुसार यह तिथि बर्मा की परम्पराओं के अनुसार बुद्ध के निर्वाण-काल पर आधारित थी -

बुद्ध का जन्म 1887 ई॰पू॰, बुद्ध का निधन 1807 ई॰पू॰

विभिन्न देशों में प्रचलित बुद्ध के निर्वाण की तिथियाँ

श्री लंका की पारम्परिक तिथियाँ	:	483 ई॰पू॰
बर्मा की पारम्परिक तिथियाँ	:	544 ई॰पू॰
भारतीय विद्वानों की अनुसंधानित तिथियाँ		
कोटा वेंकटाचलम्, श्री राम साठे, और थ्यागराज अय्यर द्वारा तिथियाँ	:	1807 ई॰पू॰
के॰एन॰ कपूर	:	1801 ई॰पू॰
प्रो॰ के॰ श्रीनिवास राघवन	:	1800 ई॰पू॰
तिब्बतियन तिथियों में काफी अन्तर है	:	567 ई॰पू॰ से 9000 ई॰पू॰

थाईलैण्ड की पारम्परिक तिथियाँ	:	7000 ई॰पू॰
चीनी पारम्परिक तिथियाँ	:	11000 ई॰पू॰

आदि शंकराचार्य की जन्म-तिथियाँ :

द्वारिका, पुरी और काँची के मठों के द्वारा प्रमाणित पत्र अनुसार	:	509 ई॰पू॰
सर विलियम जॉन्स के ऐतिहासिक पत्रक	:	788 ई॰ सन्

महावीर स्वामी की जन्म-तिथियाँ :

महावीर स्वामी जैन-परिपाटी के 24वें तीर्थंकर थे। उनका जन्म कलियुग की 26वीं शताब्दी अथवा 600 ई॰पू॰ में हुआ था।

कोई भी व्यक्ति आसानी से समझ सकता है कि सर विलियम जॉन्स के ऐतिहासिक कालक्रम-पत्रक निश्चित रूप से भारतीय इतिहास की पुरातनता को कम करने में सफल रहे। इसी कारण से भारत के वर्तमान विभिन्न विश्वविद्यालयों में चल रहे विकृत पाठ्यक्रम महावीर स्वामी और बुद्ध को समकालिक प्रदर्शित करते हैं।

यह भारतीयों के लिए अति दुःख की बात है कि आजकल स्वतन्त्रता-प्राप्ति के 57 वर्षों पश्चात् भी भारतीय पाठ्यपुस्तकों में उपर्युक्त विकृत पाठ्यक्रम के विचारों की ही भरमार है, इस विकृत इतिहास के आधार पर बुद्ध-काल 563 से 483 ई॰पू॰ दिखाया गया है। महावीर स्वामी तथा बुद्ध को समकालिक प्रदर्शित कर भारतीय इतिहास के 1000 स्वर्णिम वर्षों को धूमिल कर दिया।

नोट : इतिहासकार कभी भी किसी कालक्रम पर एकमत नहीं होते। दुर्भाग्य से, अधिकतर पाश्चात्य विद्वानों द्वारा नेपाली तथा कश्मीरी राजवंशों के कालक्रम, विस्तृत एवं गूढ़ ग्रंथ 'कलियुग राजवृत्तान्त' सहित पुराणों के ऐतिहासिक अभिलेखों को एकपक्षीय तौर पर अस्वीकार कर दिया गया है। तथापि, विभिन्न ग्रहणों की विस्तृत गणनाएँ, ऐतिहासिक महत्त्व की राज-गाथाएँ, राज-दस्तावेज जैसे कि 'लैण्ड गिफ्ट्स अथवा भूमि-स्थानांतर के अभिलेख',

पुरातात्त्विक प्रमाण, विभिन्न संस्कृतियों के ऐन्थ्रोपॉलोजी सम्बन्धी अध्ययन, ऐतिहासिक घटनाओं को पुनर्व्यवस्थित और सुव्यवस्थित करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। इन ऐतिहासिक तथ्यों को भी अस्वीकार कर पाश्चात्य विद्वानों तथा उनके संकीर्ण, मानसिक गुलामी से ग्रसित भारतीय विद्वानों ने हिन्दुओं के साथ अति घोर विश्वासघात किया है।

महत्त्वपूर्ण पुरातत्त्व सम्बन्धी खोज :

कनार्टक में बीजापुर के आइहॉले जैन मन्दिर के संस्कृत-शिलालेख पर महाभारत-युद्ध, कलियुग के आरम्भ-काल और चालुक्य-नरेश पुलकेशिन के शासन, 508–531 ई॰ की बिलकुल सही तिथियाँ स्थापित की गई हैं।

11

प्राचीन युग के कालों की तुलना तथा भारत से प्राचीन वैदिक लोगों का विदेश-गमन

(पंडित रघुनन्दन शर्मा, वैदिक सम्पत्ति, 1931)

ई॰ सन् 2005 तक शोधित

सृष्टि संवत्, मानव का पृथिवी पर प्रादुर्भाव, 1972940107

वैवस्वत मनु 120533107

चीन काल 96002506

खत्ता काल 88840378

कालडियन सृष्टिरचना-काल 21500077

कालडियन काल 470077

ईरान की ओर देशान्तरण 189985

कलियुग-काल 5107

मोजेज-काल 5765

ईरान (पारसी(काल 6019

फोनेशिया की ओर देशान्तरण 30077

मिश्र को देशान्तरण 28659

वैदिक लोगों का आधुनिक काल में भारत से विदेश-गमन

जलयान द्वारा अरेबियन, गुयाना, सूरिनाम, दक्षिण अमेरिका आदि देशों को विदेश-गमन ....ई॰ सन् 1845

वैदिक साहित्य-रचना :

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा अन्य ग्रंथों के अनुसार

वैदिक साहित्य-रचना-काल-गणना ई॰ सन् से पूर्व (B.C.)	
	वेद 1,972,949,107 ई॰पू॰,
	* सूर्य सिद्धान्त 1,953,720,030 ई॰पू॰,
	रामायण 1269077 ई॰पू॰,
	ब्राह्मण ग्रंथ 22077 ई॰पू॰
	महाभारत 3138 ई॰पू॰,
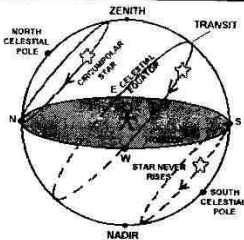
आधुनिक वैज्ञानिकों द्वारा ब्रह्माण्ड का एक मॉडल

सृष्टि से उपलब्ध
मुख्य संवतों का तुलनात्मक अध्ययन

सृष्टि संवत्, 155,521,972,949,107 ब्रह्माण्ड–उत्पत्ति

काल	वर्ष	संवत् / घटना
आदि काल	5.0 अरब वर्ष पूर्व	कार्ल सेगन, यूएस नक्षत्रविद् द्वारा प्रस्तुत सूर्य के वर्ष (सूर्य)
	4.5 अरब वर्ष पूर्व	कार्ल सेगन, यूएस नक्षत्रविद् पृथिवी की आयु (पृथ्वी)
	1.9 अरब वर्ष पूर्व	मानव–जीवन का पृथ्वी पर प्रादुर्भाव
	18,149,107 वर्ष पूर्व	रामायण काल
मध्य काल (ई॰ पू॰)	3761 वर्ष पूर्व →	यहूदी (हिब्रू) वर्ष
	3142 वर्ष पूर्व →	महाभारत युद्ध
	3102 वर्ष पूर्व →	कलियुग संवत्
	2701 वर्ष पूर्व →	चीन वर्ष
	1850 वर्ष पूर्व →	जोराष्ट्रियन
	536 वर्ष पूर्व →	महावीर संवत्
	57 वर्ष पूर्व →	विक्रम संवत्
नवीन काल (ई॰ सन् के बाद)	ईसा के 81 वर्ष बाद →	शक संवत्
	ईसा के 583 वर्ष बाद →	इस्लामिक
	ईसा के 1472 वर्ष बाद →	गुरु नानक सिख संवत्
	2005 वर्ष →	वर्तमान ई॰ सन्

आदिकाल से प्राचीन बृहद् भारत से विविध वैदिक जनसंख्या के देशान्तर-गमन का वर्णन इस प्रकार है :

1. खत्त, खत्तिक तथा खतिश भाषाएँ हतुशा के प्राचीन लोगों द्वारा बोली जाती थीं। इस प्राचीन हितिते प्रान्त में हिन्दू-यूरोपियन लोग रहते थे। इनकी लिपि आधुनिक टर्की के बोगझकॉय भाग के हितिते खण्डहरों में पाई गई थी, ऐसा ब्रिटैनिका के विश्व ज्ञानकोष (Encyclopedia) में बतलाया गया है।
2. सांस्कृतिक ऐन्थ्रोपॉलोजी का अध्ययन करने पर, प्राचीन भारतीय सभ्यता को मिश्र के अरबी संगीत में ढूँढा जा सकता है। नील नदी के संगीतकारों की परम्पराएँ भारत के प्राचीन चारण (भाट) कवियों की परम्पराओं के अनुरूप पाई गईं। हाल ही में बनी टॉनी गेटलिफ द्वारा निर्देशित फिल्म 'लच्छो ड्रोम' में भारत से जलयात्रा द्वारा पलायन हुए जिप्सी, बनजारे, भाट इत्यादि लोगों की संस्कृति तथा संगीत, मिश्र की नील नदी के संगीतकारों में अभी भी मिलती है। हाल ही में रियल वर्ल्ड रिकॉर्ड लिमिटेड न्यूयार्क, न्यूयार्क, द्वारा प्रस्तुत की गई कॉम्पेक्ट डिस्क (आडियो सीडी) 'दें म्यूजीसिअन्स ऑफ दें नील' भारत के राजस्थानी शैली के संगीत को 'चारकोल जिप्सीज, 1995' के अन्तर्गत दर्शाया गया है। इस कॉम्पेक्ट डिस्क (आडियो सीडी) 'दें म्यूजीसिअन्स ऑफ दें नील' द्वारा अरबी संगीत में राजस्थानी शैली के संगीत की अमिट झलक देखने को मिलती है। भारत से जलयात्रा द्वारा पलायन हुए जिप्सी, बनजारे, भाट इत्यादि लोगों की यह निधि है। वहीं बसने के कारण उनका 'मज़हब तथा भाषा' का परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन हो गया, पर उनकी

राजस्थानी शैली की सांस्कृतिक छवि अभी भी उनके अरबी संगीत में पूर्णतया झलकती है। उपर्युक्त सी॰डी॰ द्वारा प्रस्तुत संगीत-खोज को अमेरिका के नेशनल पब्लिक रेडियो की टिप्पणी द्वारा प्रामाणिक घोषित कर 1998 में प्रसारित किया गया।

3. चालडिएन लोग आधुनिक इराक के एक छोटे-से 'उर' नामक कस्बे के रहनेवाले थे। प्राचीन काल में इराक को मैसोपोटामिया के नाम से जाना जाता था। प्रेमसुख पूनै, एम॰डी॰, पी-एच॰डी॰, के अनुसार मैसोपोटामिया को मध्यमोपस्तरणम्, नदियों के मध्य की भूमि कहा जाता था। डॉ॰ पूनै ने मैसोपोटामिया के उर, इरेछ, एरिडु, किश, अल उबैद तथा सियाल्क अनाउ और सिन्धु-सरस्वती तथा सिन्धु-गंगा के क्षेत्रों की खुदाई से मिली खोपड़ियों की समानता का भी वर्णन किया है। डॉ॰ पूनै ने अपनी पुस्तक 'ओरिजिन ऑफ सिविलाइजेशन एण्ड लेंग्वेज/सभ्यता और भाषा का उद्‌भव' में व्यक्त किया कि प्राचीन सुमेर खेती-जोत की भूमि थी, जिसके मालिक और कृषक प्रवासी हिन्द-ऋग्वैदिक लोग थे। डॉ॰ पूनै ने व्यक्त किया कि विभिन्न कबीले जैसे कि 'असुर-आर्यन्स' को असीरियंस के रूप में, तथा अग्गर लोगों को अक्कड़स के रूप में जाना जाने लगा। अमर के अनुगामियों को अमोराइटिस के रूप में, भूपालों को बेबिलोनियंस के रूप में, क्षत्रियों को हिट्टीटिस के रूप में, मित्रानयों को मितैनी के रूप में, मदाई को मीडीस, इयामों को एलमाइट्स और चालडिएन के रूप में जाना जाने लगा तथा पुरुषम् आर्यानम् का संक्षिप्त अपभ्रंश रूप पार्थिअंस बना। वैदिक ज्ञान को पूर्व तथा पश्चिम दोनों दिशाओं में फैलानेवाले तत्त्व हिमालय के सिन्धु-सरस्वती तथा सिन्धु-गंगा क्षेत्रों में ही पले-बढ़े थे।

4. फोनेशिया की भौगोलिक स्थिति आधुनिक लेबनान है।
5. महाभारत व्यक्त करता है कि गंधर्व लोग गंधार में रहते थे, जो कि वर्तमान में अफगानिस्तान है। यह भली-भाँति स्थापित किया जा चुका है कि जिप्सी लोग भारत से गए थे। यह नेशनल ज्योग्राफिक सोसायटी वाशिंगटन डी॰सी॰ द्वारा किए गए अध्ययनों से सिद्ध किया जा चुका है। गंधर्व लोग अथवा जिप्सी लोगों को एक अन्य प्रसिद्ध नाम 'बंजारा' से भी जाना जाता है। 'बंजारा' का अर्थ ऐसे लोग होते हैं जो वस्तुओं के व्यापार के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान एवं एक वन अर्थात् जंगल से दूसरे वन अर्थात् जंगल को पार कर, अलग-अलग जगह सामान बेचने हेतु व्यापारिक दृष्टि से स्थानान्तरित होते रहते हैं। गंधर्व लोग चलते-फिरते व्यापारियों के रूप में भी प्रसिद्ध हैं। ये अपनी संस्कृति का नाच-गान द्वारा प्रचार-प्रसार करते रहे हैं। यही लोग आधुनिक जिप्सी जाति के पूर्वज हैं।
6. प्राचीन बृहत् भारत से वैदिक लोगों के देशांतर-गमन के विषय में Louis Jacolliot ने 1876 ई॰ सन् में अपनी पुस्तक "La Bible Dans L' Inde" में लिखा है :

   'भारत विश्व का पालना है। उस जगत् माता ने अपने बच्चों को पश्चिम के अन्तिम छोर तक भेजते हुए अपनी भाषा, अपने कानून, अपने नैतिक मूल्य, अपना साहित्य और अपना धर्म, हमारे उद्‌भव के सदाबहार साक्ष्य के रूप में, हमें विरासत-स्वरूप प्रदान किए हैं।'

   'पर्शिया, अरब, मिश्र को पार करते हुए तथा ठण्डे और बर्फीले उत्तर की ओर अपनी राह बनाते हुए, अपनी जन्म-स्थली की तपती हुई मिट्टी से बहुत दूर, भले ही वे वृथा ही अपनी प्रस्थान-स्थली को भूल जाएँ, उनकी चमड़ी का रंग भूरा रहे अथवा पश्चिमी देशों के श्वेत बर्फ के

सम्पर्क में आने से सफेद हो जाए, उनके द्वारा आबाद की गई सभ्यताओं के प्रतापी राज्य नष्ट हो जाएँ तथा संगतराश स्तम्भों के कुछ खडहरों के अतिरिक्त कुछ अवशेष न बचे, पूर्वजों की राख से नए लोग उठ खड़ें हों, पुराने नगरों के स्थान पर नए नगर आबाद हो जाएँ, लेकिन समय और विनाश दोनों मिलकर भी उद्गम-स्थली के सदा सुस्पष्ट वैदिक संस्कृति के अमिट चिह्नों को नहीं मिटा सके।'

विश्व के विभिन्न संवतों की तुलना
पंडित रघुनन्दन शर्मा, वैदिक सम्पत्ति, 1931
(ई० सन् 2005 तक शोधित)

Brahmand Era ब्रह्माण्ड उत्पत्ति–Development of present Universe:

Sristi Era सृष्टि संवत् 155,521,972,949,107 or 155 trillion years

*** Kalpa, or Vedic Era of Creation of life on the Earth :**

19,749,107 or 1.9 billion years

Era		Value				
Old Chinese Era	:	9,602,501	or	900	million	years
Hittite Era	:	88,840,377	or	800	million	years
Chaldean Era	:	2,150,37	or	200	million	years
Persian Era	:	189,971	or	1	million	years
Finishian Era	:	30,007	or	30	thousand	years
Egyptian Era	:	28,668	or	28	thousand	years
Old Turkish Era	:	7,611				years
Irani/Parsi Era	:	6,009				years
Jewish Era	:	5,765				years
*28th Cycle of Kaliyuga:		5,107 year started on Thursday 17th Feb., 2005 A.D.				
New Chinese Era	:	4,361				years
New Turkish Era	:	4,295				years
Greek Era	:	3,577				years
Roman Era	:	2,754				years

Vikram Era : 2,062 year	Started in North India on Saturday, March 26, 2005.
Shaka Era : 1,928 year	Started on Saturday, April 9, 2005 AD

Christian Era: 2005 years starts on Tuesday January, one

Islamic or Hijri Era : 1427 years

Sikh Nanakshahi Samvat 537 years, start on March 15, 2005 AD

Khalsa Samvat 307 years, start on April 13, 2005 AD

* Kalpa or Vedic Era of origin of life or biological creation: arrival of vegetations, animal and human life on the Earth 1,972,949,107 years and currently interlinked to present 28th cycle of Kaliyuga.

12

सन्दर्भ ग्रन्थ प्रदर्शिका : स्रोत-सूची

1 चार वेद,

2. उपनिषद् और षड् दर्शन,

3. ब्राह्मण और सूत्र ग्रंथ,

4. मनुस्मृति,

5. वाल्मीकि रामायण,

6. महाभारत,

7. गीता,

8. सूर्य-सिद्धांत,

9. सत्यार्थ प्रकाश

10. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका,

12. भर्तृहरि-शतक,

13. विदुर-नीति,

14. चाणक्य-नीति,

15. वैदिक सम्पदा,

16. संस्कार भास्कर,

17. आर्यन् प्रेयर,

18. हितोपदेश।

नोट : उपर्युक्त सभी पुस्तकें गोविन्दराम हासानंद, आर्य साहित्य प्रकाशक से उपलब्ध हैं। पता निम्नांकित है-

1. विजयकुमार गोविन्दराम हासानंद, 4408, नई सड़क, दिल्ली-110006, दूरभाष : 23977216,
   E-mail:ajayarya@vsnl.com

2. श्री राम साठे: भारत युद्ध, साहित्य निकेतन, 3-705/4, नारायणगुडा, हैदराबाद-500029, मई 1983 ई॰।
3. स्वामी विवेकानंद, स्वामी ज्योतिर्मयानन्द द्वारा, 1 एम॰वी॰ नायडू स्ट्रीट, पंचवटी, चेतपुट, मद्रास, भारत-600031, अक्तूबर 1986 ई॰।
4. आई॰ रॉबर्टसन: सोसियॉलोजी, तीसरा संस्करण, न्यूयार्क, न्यूयार्क, यू॰एस॰ए॰ 1987 ई॰।
5. एच॰वी॰ शेषाद्रि : ऑवर फैस्टिवल्स: द हिन्दू कौंसिल ऑफ केन्या, नैरोबी, केन्या, अप्रैल 1983 ई॰।
6. रॉबर्ट ए॰ जॉनसन : फेमिनिटी लॉस्ट एण्ड रिगेन्ड, हार्पर एण्ड रो, पब्लिशर्स, न्यूयार्क, न्यूयार्क, 1921 ई॰।
7. लुइस जेकोलियट : ला बाइबल डान्स एल' इण्डे, लाक्रोइक्स ईटीसी, एडिटर्स, पेरिस, फ्रांस, 1876 ई॰।
8. जे॰सी॰ शर्मा : हिन्दू टैम्पल्स इन वियतनाम, नई दिल्ली, दिसम्बर 1997 (चम्पा के मन्दिर, 1992 भी)।
9. द अमेरिकन हेरिटेज डिक्शनरी, हॉगटन मिकिन कम्पनी, बोस्टन, यू॰एस॰ए॰ 1985 ई॰।
10. श्री राम साठे : डेट्स ऑफ दॅ बुद्ध/बुद्ध का काल, साहित्य निकेतन 3-705/4 नारायणगुडा, हैदराबाद-500029, मार्च 1987 ई॰।
11. एस॰आर॰एन॰ मुर्थी : वैदिक व्यू ऑफ दॅ अर्थ, जिओलॉजिकल इनसाइट इन दॅ वेदा, के प्रिंट वर्ल्ड लिमिटेड, नई दिल्ली, 1997 ई॰।
12. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती : पातंजल राजयोग, एस॰ चंद एण्ड कम्पनी (प्राइवेट) लिमिटेड, नई दिल्ली, 1975 ई॰।
13. स्वामी विद्यानन्द सरस्वती : ऑन दॅ वेदाज, ए क्ल्यू टु अंडरस्टैंडिंग ऑफ वेदाज, नई दिल्ली, 1996 ई॰।

14. सर मोनियर मानियर विलियम्स : ए संस्कृत–इंग्लिश डिक्शनरी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, ऑक्सफोर्ड, 1899.
15. प्रोफेसर सुरेन्द्र कुमार, विशुद्ध मनुस्मृति, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली, भारत, 1999 ई०।
16. एफ० मैक्सम्यूलर : दॅ लाज ऑफ मनु, 1886, लो प्राइस पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1996 ई०।
17. सत्यप्रकाश सरस्वती : अग्निहोत्र, जन ज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली– 5, 1935 ई०।
18. प्रोसीडिंग्ज ऑफ 1996 इण्टरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन 'रिविजिटिंग इण्डस–सरस्वती ऐज एण्ड एनसिएंट इण्डिया', शर्मा एण्ड घोष, वर्ल्ड एसोसिएशन ऑफ वैदिक स्टडीज, एटलांटा, जार्जिया, यू०एस०ए०।
19. शिवराम करीकल, वैदिक थॉट एण्ड वैस्टर्न साइकॉलोजी, आर्थी पब्लिकेशन्स, मैंगलौर, 1994 ई०।
20. द म्यूजिसिअंस ऑफ नील, चारकोल जिप्सीज, सीडी, बाक्स, कोर्शम, विल्टशायर रिअल वर्ल्ड रिकॉड्र्स, इनकॉर्पोरेशन, 104 वैस्ट 29वीं स्ट्रीट, न्यूयार्क, न्यूयार्क 10001, यू०एस०ए०।
21. एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका।
22. सुहोत्रा स्वामी, सिक्स सिस्टम्ज ऑफ वैदिक फिलासिफीज, भक्तिवेदान्त अकादमी, आइसकॉन, बी०बी०टी० मायापुर, 1997 ई०।
23. रिचर्ड० ए० श्वूडर, हाउ यूनिवर्सल आर वेल्यूज, साईंटिफिक अमेरिकन, न्यूयार्क, न्यूयार्क, 10017–1111 अगस्त, पृष्ठ 76, 1999 ई०।
24. प्रेमसुख पुण्य, ओरिजिन ऑफ सिविलाइजेशन एण्ड लैंग्वेज, पीयर्स पब्लिशर्स, इनकॉर्पोरेशन डेटोना बीच, फ्लोरिडा, यू०एस०ए०, 1994 ई०।

25. डॉ॰ रवि प्रकाश आर्य, भारतीय काल गणना का वैज्ञानिक एवं वैश्विक स्वरूप, नई दिल्ली, 1998.
26. रॉबर्ट सुलिवन, 2000 ईअर्स ऑफ क्रिस्चियनिटी, लाइफ, टाइम एण्ड लाइफ बिल्डिग, न्यूयार्क, न्यूयार्क पृष्ठ 50, दिसम्बर, 1999 ई॰।
27. महर्षि दयानन्द सरस्वती, अपना जन्मचरित्र, इं आदित्यपालसिंह आर्य, डॉ॰ वेदव्रत 'आलोक', अदिति प्रकाशन, 1595, हरध्यानसिंह मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, 1987 ई॰।
28. युधिष्ठिर मीमांसक, स्वामी विश्वेश्वरानन्द ब्रह्मचारी, पुरुषार्थ-प्रकाशः, रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़, सोनीपत, 1988 ई॰।
29. डॉ॰ सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, संस्कार-चन्द्रिका, विजयकृष्ण लखनपाल, ए॰डब्लू॰ 77/ए, ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली-110048, 1990 ई॰।
30. श्री वीरसेन वेदश्रमी, वैदिक सम्पदा, विजय कुमार गोविन्दराम हासानंद, 4408, नई सड़क, दिल्ली-110006, 1996 ई॰।

13

शब्द-सूची

अग्निहोत्र 66,67,68,73,89,110,111

अहिंसा 15,132,133,140,141,165,166,217

अर्थ 21,22,28,31,57,59,65,67,68,70,71,76, 87,100,121,128,129,132,133,134,135, 136,144,152, 157,163, 166,216

आर्य, आर्यन् 59,60,61,62,65,66,76,145,200,201,240

आश्रम 54,77,79,80,81,82,83,163,217

अष्टांग 100,131,140,141,143,151,152,156, 157,163,168, 193,195,216,226,227,228

उपनिषद् 33,34,36,108,130,144,145,149,154,158, 159,161,193,194,195,220

ओ३म् 31,32,37,67,138,139,144,145,148, 149,150, 165,171

भर्तृहरि 114,115,119,185,186,189,222

ब्रह्मचर्य 77,81,82,83,132,133,134,140,141,163, 165,217

ब्रह्मा 40,41,46,47,54,88,89,160,224

ब्रह्म 36,47,88,89,97,98,110,132,144,149, 157,160, 193, 194,216,223,224,225

ब्राह्मण 33,34,70,84,86,88,89,108,158,182,219
चतुर्युग 39,40,44,46,54,119,205,229
चाणक्य 61,103,104,114,115,119,128,189,222, 244
देवता 105,113,111,147,160,161,198,224
देवी 104,147,169,224
धर्म 13,21,22,23,28,29,37,69,84,85,89,90,91, 96,97, 98,99,116,124,129,146,157,162, 163,164,166,167,170,175,214,215,216,226
द्रविड़ 61
द्वापरयुग 44,59,119,205,222,229
गीता 61,127,130,153,196,207,222
हिन्दू 9,15,17,23,24,25,27,28,29,37,59,85, 87,88,89,90,92,93,94,98,103,116,120, 126, 133,143,159,160,162,169,197,214
ज्ञान 8,28,31,36,78,84,97,98,100,109, 110,111,115,116,126,131,134,140, 142,152,157,162,164,165,168,170,173, 174,192,194,196,216,218,222,225,226
काम 100,129,157,166,216
खरोष्ठ 32,62,63,65
महाभारत 21,34,35,55,58,59,71,114,127,190,196,201, 205,208,209,222,229,230,235,237,241

मन्वन्तर 35,37,38,41,46,229,230

मोक्ष 101,126,129,131,151,157,163,166,194, 216,224,228

नीति 98,107,114,115,128,189,222,228

पाण्डव 61,190

पतंजलि 100,103,130,131,136,140,141,143,149, 151,152,156,157,163,164,170,193,195, 216,221,226,228

प्रकृति 13,21,81,97,133,,151,152,153,154,155, 157,167,170,175,194,195,214,224,225,227

प्रवृत्ति 69,78,80,139,152,226

पुरुषार्थ 129,130,146,157,159,163,167,215,221,226

रामायण 34,35,54,55,56,59,126,183,201,205,208, 212,222,237,238,244

सभा 90,91,92

सनातन 17,28,29,30,90,91,94,98,100,162,167, 214,227

संस्कार 34,71,72,73,74,75,76,77,78,80,81,167,219

संस्कृत 17,21,22,25,26,31,32,33,57,71,107,130, 147,198, 201,214,235

सत्‌युग 39,44,46,119

स्वस्ति 62,63,65,66

शतकम् 114,115,222

श्रुति 30,31,34,37

त्रेतायुग 39,44,55,119,205,229,230

वैदिक 17,25,26,28,29,30,31,33,37,42,53,76,88, 89,110,115,133,140,162,167

वेद 27,28,30,31,33,34,35,66,87,89,100, 110,129,144, 149,152,158,162,165,175, 182,198,216,217,218,229,237

वेदान्त 35,36,151,157,192,193,194,195,221

विदुर 107,114,190,222

विक्रमादित्य 114,119,183,185,186,187,188,189,207,231

यज्ञ 68,69,70,71,72,110,111,113,123,130, 162,163,164,165,170,192,226,227

योग 100,110,130,131,132,136,138,140,141, 142,143,151,152,156,157,163,165,168, 193,195,196,216, 217

14

परिशिष्ट 1.

लेखक-परिचय

लेखक, पण्डित दीनबन्धु चन्दोरा का जन्म राजस्थान प्रदेश के जोधपुर नगर में हुआ था। सन् 1964 में उन्होंने सरदार पटेल मैडिकल कॉलेज, बीकानेर, राजस्थान से मैडिकल (M.B.B.S) में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। श्री चन्दोरा ने इंस्टीच्यूट ऑफ पोस्ट-ग्रेजुएट मैडिकल एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च (PGI) चंडीगढ़ से मैडिसिन में स्नातकोत्तर (एम॰डी॰ मैडिसन) की उपाधि प्राप्त की। अपने शिक्षा-काल के दौरान लेखक ने बहुत-से साहित्यिक, सामाजिक और धार्मिक संगठनों में सक्रिय भाग लिया। डॉ॰ चन्दोरा ने सरदार पटेल मैडिकल कॉलेज, बीकानेर, राजस्थान में मैडिसिन का अध्यापन-कार्य किया और मैडिसन की निजी प्रेक्टिस भी की।

अमेरिका पहुँचने के पश्चात्, लेखक ने पूरे विश्व की विस्तृत रूप से यात्रा की। यूनान, मैक्सिको, नीदरलैण्ड्स, स्विट्जरलैण्ड, ब्रिटेन और संयुक्तराज्य अमेरिका में आयोजित विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलनों में अपने शोध-पत्रों को प्रस्तुत किया। डॉ॰ चन्दोरा ने Medical College of Georgia, Augusta and Emory University School of Medicine, Atlanta, Georgia, USA में भी अध्यापन-कार्य किया। लेखक न्यायोचित और धार्मिक प्रयोजनों की सिद्धि में हमेशा अग्रगामी रहा है। सन् 1967 में डॉ॰ चन्दोरा ने अमेरिकन सांस्कृतिक एसोसिएशन को विश्वस्त किया कि ISKCON (इण्टरनैशनल सोसायटी ऑफ कृष्णा कॉनशियसनेस) कोई बेहूदा गिरोह/समुदाय याने cult नहीं

है, बल्कि हिन्दू धर्म का एक भाग है। सन् 1995 में उन्होंने रूसी राष्ट्रपति येल्त्सिन को वैष्णव भक्तों ISKCON सदस्यों पर रूस में हो रहे उत्पीड़न को बंद करने के लिए मनाया। सन् 1986 में, डॉ० चन्दोरा ने अपने मित्रों के सहयोग से एटलाण्टा, जार्जिया, अमेरिका में वैदिक मन्दिर की स्थापना की। सन् 1996 में डॉ० चन्दोरा (पण्डित शर्मा) ने एटलाण्टा, जार्जिया, संयुक्तराज्य अमेरिका में प्राचीन भारत पर प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन 'इण्टरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन एनसिएंट इण्डिया' का सफल आयोजन किया। इस सम्मेलन का उद्घाटन ट्रिनिदाद एण्ड टोबैगो के प्रधानमंत्री श्री बासदेव पाण्डे ने किया था। इस सम्मेलन में ऐन्थ्रोपॉलोजी, पुरातत्त्वशास्त्र, दर्शनशास्त्र, धर्म और अन्य सम्बंधित विषयों के तीन सौ से अधिक विश्व-प्रसिद्ध विद्वानों ने भाग लिया। इस सम्मेलन से सन् 1997 में 'दॅ वर्ल्ड एसोसिएशन ऑफ वैदिक स्टॅडीज(WAVES), वैदिक अध्ययन के वैश्विक संगठन' की स्थापना को प्रेरणा मिली। इससे अगस्त 1998 में लॉस एंजलस, केलिफोर्निया, संयुक्तराज्य अमेरिका में द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के सफल आयोजन का मार्ग प्रशस्त हुआ। दूसरे सम्मेलन का मुख्य विषय "New Perspective on Vedic and Ancient Indian Civilization" 'वैदिक और प्राचीन भारतीय सभ्यता पर नए विचार' था। तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन स्टीवेन्श इंस्टीट्यूट, न्यू जर्सी, 2000 में, तथा चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन डार्ट माउथ विश्वविद्यालय, मेसाचुसेट्स में 2002 जुलाई 12-14 को सम्पन्न हुआ। पंचम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन जुलाई 11 से जुलाई 13, 2004 में अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन डी०सी० में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

पण्डित दीनबन्धु चन्दोरा विभिन्न धार्मिक संगठनों द्वारा भी हिन्दू धर्म पर व्याख्यान देने हेतु बुलाए जाते रहे हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों का ध्यानाकर्षण करने तथा हिन्दू धर्म के दर्शन को

सरल और सुस्पष्ट रूप में प्रकट करने के लिए लेखक ने 'हिन्दू-शतकम्' की रचना की है।

इस रचना की पूर्णाहुति में श्री आदित्य चन्दोरा का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। श्री आदित्य चन्दोरा का जन्म बीकानेर, राजस्थान में मार्च 18, 1969 को हुआ था, तथा अगस्त 1974 में अमेरिका आए थे। अमेरिका में ही अपनी स्नातकोत्तर परीक्षा पास कर ओल्डिज फर्म में Wall Street Trader, ट्रेडर का कार्य आरम्भ किया। परन्तु ट्रेडिंग कार्य धोखाधड़ी से भरपूर होने के कारण उसे त्यागकर न्यूयार्क के फिल इंस्टीट्यूट में ट्रेनिंग कर अपनी स्वयं की चार फिल्में बनाईं।

श्री आदित्य चंदोरा डॉ॰ चन्दोरा के ज्येष्ठ पुत्र थे। वे अपनी पाँचवीं सिने फिल्म की ऐडिटिंग करने July 2002 में रमण नायडू स्टूडियो, हैदराबाद भारत गए। भारत में अपने पितामह से मिलने जोधपुर Sept. Ist, 2003 को जा पहुँचे। सितम्बर एक, ई.स. 2002 को जोधपुर में मोटर साइकिल दुर्घटना से बेहोश होने के कारण दिल्ली अपोलो अस्पताल में वायुयान एम्बुलेंस से ले-जाए गए। पर पाँच सितम्बर को उन्होंने अपनी आँखें, हृदय, यकृत, गुर्दे तथा अपनी जीवन-शक्ति को अन्य जनों को दान कर उनके परिवारों में जीवन की ज्योति जलाकर, अपना नश्वर चोला पीछे छोड़, इस संसार से तैंतीस वर्ष की अल्प आयु में विदाई ले ली।

यह पुस्तक उनकी अमिट यादगार है, ताकि इस पुस्तक को पढ़ सभी अपना जीवन सफल कर, समाज का एवं स्वयं का कल्याण कर सकें।

ओम प्रकाश अरोड़ा, एम॰डी॰,
एटलाण्टा, जार्जिया, यू॰एस॰ए॰